1925C Downfall of My Country

Desh Ki Durdasha (In Matrabhumi, June 1925)

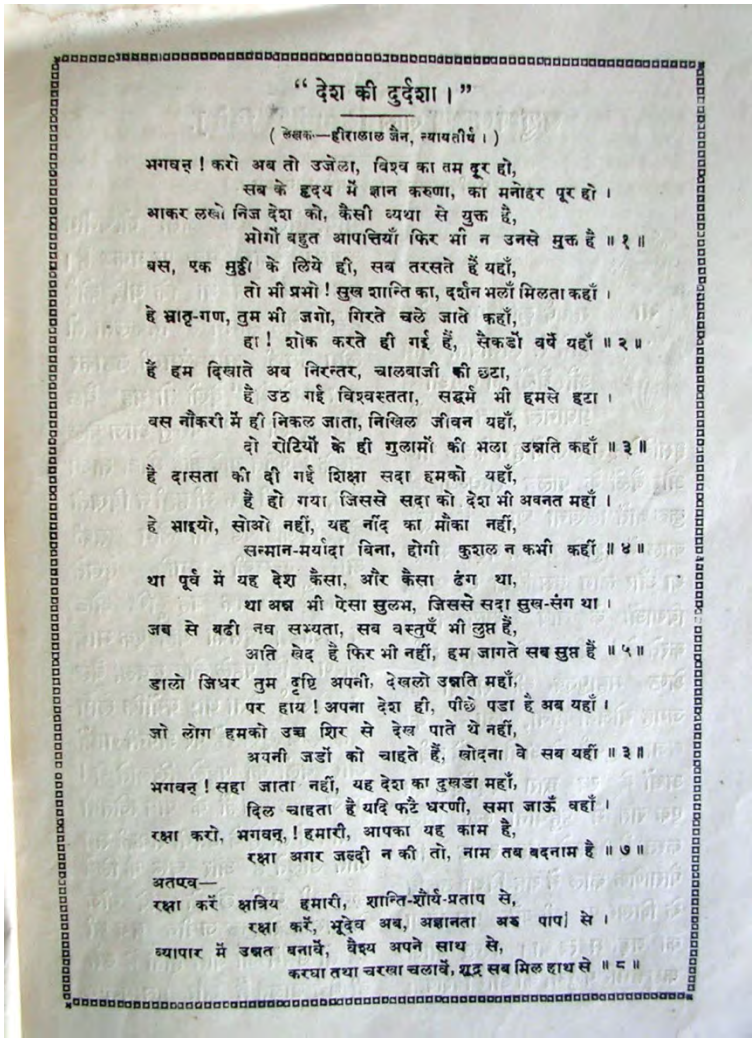

"देश की दुर्दशा।"

(लेखक—हीरालाल जैन, न्यायतीर्थ।)

भगवन्! करो अब तो उजेला, विश्व का तम दूर हो,
सब के हृदय में ज्ञान करुणा, का मनोहर पूर हो।
भाकर लखो निज देश को, कैसी व्यथा से युक्त है,
भोगों बहुत आपत्तियाँ फिर भी न उनसे मुक्त है ॥ १ ॥

बस, एक मुट्ठी के लिये ही, सब तरसते हैं यहाँ,
तो भी प्रभो! सुख शान्ति का, दर्शन भलाँ मिलता कहाँ।
हे भ्रातृ-गण, तुम भी जगो, गिरते चले जाते कहाँ,
हा! शोक करते ही गई हैं, सैकडों वर्षे यहाँ ॥ २ ॥

हैं हम दिखाते अब निरन्तर, चालबाजी की छटा,
है उठ गई विश्वस्तता, सद्धर्म भी हमसे हटा।
बस नौकरी में ही निकल जाता, निखिल जीवन यहाँ,
दो रोटियों के ही गुलामों की भला उन्नति कहाँ ॥ ३ ॥

है दासता की दी गई शिक्षा सदा हमको यहाँ,
है हो गया जिससे सदा को देश भी अवनत महाँ।
हे भाइयो, सोओ नहीं, यह नींद का मौका नहीं,
सन्मान-मर्यादा बिना, होगी कुशल न कभी कहीं ॥ ४ ॥

था पूर्व में यह देश कैसा, और कैसा ढंग था,
था अन्न भी ऐसा सुलभ, जिससे सदा सुख-संग था।
जब से बढी नव सभ्यता, सब वस्तुएँ भी लुप्त हैं,
अति खेद है फिर भी नहीं, हम जागते सब सुप्त हैं ॥ ५ ॥

डालो जिधर तुम दृष्टि अपनी, देखलो उन्नति महाँ,
पर हाय! अपना देश ही, पीछे पडा है अब यहाँ।
जो लोग हमको उच्च शिर से देख पाते थे नहीं,
अपनी जडों को चाहते हैं, खोदना वे सब यहीं ॥ ६ ॥

भगवन्! सहा जाता नहीं, यह देश का दुखडा महाँ,
दिल चाहता है यदि फटे धरणी, समा जाऊँ वहाँ।
रक्षा करो, भगवन्,! हमारी, आपका यह काम है,
रक्षा अगर जल्दी न की तो, नाम तब बदनाम है ॥ ७ ॥

अतएव—
रक्षा करें क्षत्रिय हमारी, शान्ति-शौर्य-प्रताप से,
रक्षा करें, भूदेव अब, अज्ञानता अरु पाप से।
व्यापार में उन्नत बनावें, वैश्य अपने साथ से,
करघा तथा चरखा चलावें, शूद्र सब मिल हाथ से ॥ ८ ॥

मातृभूमि

सचित्र मासिक पत्रिका

वर्ष १. | जून १९२५. | संख्या ३.

बालचर (Scout स्काउट) के प्रति।

[कवि—बदरीनारायणसिंह 'निश्छल' काशी।]

प्रेम-वारि-प्रच्छालि परिष्कृत, चित्त-वृत्ति करि शूर वरो ! ।
शान्त भाव से उन्नत-पथ-हित सुदृढ हो वनि शूर खरो ॥
तरन हेत जीवन-यात्रा तें सम्बल समुचित भूरि भरो ।
ज्ञान-ज्योति-प्रज्वलित निरन्तर करके भ्रम-तम दूर करो ॥ १ ॥
बनो संयमी, दृढ-प्रतिज्ञ, कर्मण्य, साहसी, वीर वरो ! ।
त्यागि, प्रलोभन-लोलुपता को हिय में भाव उदार भरो ॥
काल-चक्र की अद्भुतगति लखि चंचल चित सुस्थीर करो ।
स्वतन्त्रता देवी के दर्शन निश्चय होंगे धीर धरो ॥ २ ॥